मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन

Education

डॉ तिर्मल सिंह
बी एड विभाग,
श्री जयनारायन पी जी कालेज,
लखनऊ।

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण को ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। वर्तमान में शिक्षा की सार्थकता वहीं तक है जिस सीमा तक मानवीय आवश्यकताओं, अपेक्षाओं की पूर्ति कर सकें आज की चकाचौंध भरी भौतिकवादी व पूँजीवादी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में व्यक्ति की अपेक्षाओं एवं आकाक्षांओं का स्तर काफी ऊँचा होता है और उसकी पूर्ति न होने पर व्यक्ति कुन्ठा व निराशा का शिकार हो जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। सामान्यतयाः हमारे समाज में सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यम व निम्न स्थिति के लोग पाये जाते हैं जिसका प्रभाव बालक के शैक्षिक विकास पर होता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि जिन परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है, उन परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच उचित समायोजन नहीं कर पाते हैं जिससे उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं।

शिक्षा में अवसर की विषमता यथाः- शिक्षण संस्थाओं का असमान वितरण व उनके स्तर की असमानताओं आदि के कारण मलिन बस्तियों के बच्चों को आधुनिक पब्लिक स्कूलों में प्रवेश का अवसर उनके भारी-भरकम शुल्क व अन्य खर्चों की वजह से नहीं मिल पाता है जो कि एक धनी परिवार के बच्चों को आसानी से सुलभ होता है, जिसके कारण वह उच्च आर्थिक, सामाजिक स्तर वाले बच्चों से मानसिक व बौद्धिक रूप से पिछड़ जाते हैं जिससे उनका उपयुक्त शैक्षिक विकास नहीं हो पाता है।

सामान्यतया मलिन बस्तियों में अधिकांश लोग निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के होते हैं, जो अपने बच्चों की शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक आवश्यकताओं को समुचित रूप से पूरी नहीं कर पाते जिससे उनके बालक/बालिकाओं का शैक्षिक विकास बुरी तरह से प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिक व सामाजिक अध्ययनों के परिणाम बताते हैं कि जिन परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है, उन परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच पहुँचते हैं तो उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं जो एक स्वस्थ्य व्यक्ति एवं समाज की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जा सकता है। इसी कारण इन मलिन बस्तियों में विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे इनके बच्चों की शिक्षा का स्तर

सामान्य हो सके। **नेहरू रोजगार योजना, उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम** द्वारा चलाई जा रही स्वतः **रोजगार योजना, विकास निर्माण योजना, प्रशिक्षण योजना, यूनीसेफ** द्वारा चलाई गई निर्धनों के लिए नगरीय मूल सेवा योजना, आंगनबाडी निःशुल्क शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा एवं छात्रवृत्ति इत्यादि प्रमुख योजनायें हैं। इनसे मलिन बस्तियों के निवासियों के बच्चों की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ रहा हैं ? इस बात का मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता हैं।हजारों वर्षो से उत्पीड़न एवं शोषण के शिकार इन दलितों के उत्थान के लिए सामाजिक न्याय की संवैधानिक व्यवस्था के अधीन विशेष प्रकार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं तथा संरक्षण प्रदान किए जा रहे हैं,। संरक्षण एक ओर विधिक निषेधों के रूप में नकारात्मक प्रतिक्रियायें तथा दूसरी ओर उपरोक्त विकास कार्यक्रमों के रूप में सकारात्मक रूप में हैं। स्वतंत्र भारत में शिक्षा का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है क्योंकि जब सभी को समान रूप से शिक्षा प्राप्त होगी तभी सभ्य सुसंस्कृत एवं मजबूत राष्ट्र का निर्माण सम्भव हैं।

अध्ययन की आवश्यकता :

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस जटिल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का बालक के शैक्षिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ बालकों के शैक्षिक विकास को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करती हैं, ऐसे परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच पहुँचते हैं तो उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं। समाज के आन्तरिक झगड़ें, धार्मिक उन्माद, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी की भावना बालकों में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है जो एक स्वस्थ मानव समाज के लिये उचित नहीं है। सिंह, नीलम (२००६) ने देवीपाटन मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके लिंग, क्षेत्रीयता एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें पाया कि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर थी जबकि ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। वर्मा,ज्योति (२०१०). इलाहाबाद के स्लम ऐरियाज में निवास करने वाले बालकों-बालिकाओं के शैक्षिक विकास का उनके माता-पिता के शैक्षिक स्तर व उनकी वार्षिक आय के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें पाया कि जिन माता-पिता या अभिभावकों का शैक्षिक स्तर इण्टरमीडिएट से अधिक था उनके बच्चों का शैक्षिक विकास भी बेहतर था जबकि जिन बच्चों के माता-पिता या अभिभावको का शैक्षिक स्तर इण्टरमीडिएट या इससे नीचे था उनका शैक्षिक विकास भी अपेक्षाकृत निम्न था त्रिपाठी, विनीता ;२०११द्ध ने अपने सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में उत्तर प्रदेश के कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों के बच्चों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का उनके शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मलिन बस्तियों में प्रायः रहन-सहन की मूलभूत सुविधाओं यथा- आवास, पानी, सड़क, सीवर, बिजली, स्कूल व चिकित्सीय सुविधाओं का अभाव होता है।

उपरोक्त सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि देश में शैक्षिक विकास का विभिन्न समूहों, कक्षा वर्ग, लिंग, घर एवं विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि के संदर्भ मे काफी अनुसंधान कार्य किया जा चुका है। परन्तु भारतीय परिपेक्ष्य में इस क्षेत्र में सम्बन्धित अध्ययन की कमी हैं। अतः शोधकर्ता के मस्तिष्क में निम्नांकित प्रश्न उभरकर आया-

मलिन बस्तियों के बालकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उपरोक्त प्रश्न का उत्तर पाने हेतु शोधकर्ता ने मलिन बस्तियों के बालकों के शैक्षिक विकास का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

प्रयुक्त तकनीकी पदों की परिभाषा-

शैक्षिक विकास : शैक्षिक विकास से तात्पर्य मानसिक क्षमताओं के विकास से होता है। इस मानसिक क्षमता में चिन्तन करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता, याद रखने की क्षमता, सही-सही प्रत्यक्षणात्मक विभेद करने की क्षमता आदि सम्मिलित होती है। जब ऐसी क्षमतायें, बालकों में उदित होकर काफी मजबूत हो जाती है तो ऐसा कहा जाता है कि उनका शैक्षिक विकास उचित दिशा में विकास हो रहा है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर : सामाजिक-आर्थिक स्तर दो स्थितियों, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का योग है। जो व्यक्ति को जिस समाज में वह रहता है उसमें उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति तथा भौतिक सम्पत्ति यथा- आय, जाति, समाज में सम्मान, शक्ति व प्रभाव आदि के आधार पर उसे एक विशेष संस्थिति प्रदान करता है।

मलिन बस्तियाँ : मलिन बस्तियों से तात्पर्य उ.प्र. के लखनऊ महानगर के उन आवासीय क्षेत्रों से है जिनमें रहन-सहन की मूलभूत सुविधाओं यथा- आवास, पानी, सड़क, सीवर, बिजली, स्कूल व चिकित्सीय सुविधाओं का अभाव है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों से तात्पर्य उ.प्र. बोर्ड द्वारा संचालित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित अनुदानित/ गैर-अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में नियमित रुप से पढ़ रहे बालक/बालिकाओं से है।

शोध के उद्देश्य :

१ण माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं : उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है-

H01. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H01.1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

H01.2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

H01.3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए उनके सामाजिक-आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।

शोध अध्ययन की विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या के रूप में उ.प्र. के लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड की सभी अनुदानित/गैर-अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ रहे बालक/बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से निम्नांकित तीन स्तरों पर किया है-

लखनऊ महानगर के नगर निगम द्वारा अनुमोदित जोनों का चयन : लखनऊ महानगर के नगर निगम द्वारा अनुमोदित छः जोनों में से शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि े;पउचसम तंदकवउ ेंउचसपदहद्ध द्वारा तीन जोनों को न्यादर्श के रूप मे चयनित किया है।

लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों का चयन : शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि े;जतंजपपिमक तंदकवउ ेंउचसपदहद्ध द्वारा लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड के अनुदानित/गैर-अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों का न्यादर्श के रूप मे चयन निम्नांकित प्रकार से किया है-

न्यादर्श के रूप मे चयनित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र बोर्ड के अनुदानित/गैर-अनुदानित माध्यमिक विद्यालय

विद्यालय का प्रकार जोन	अनुदानित माध्यमिक विद्यालय	गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय	योग
जोन नं. १	५	५	१०
जोन नं. ३	५	५	१०
जोन नं. ५	५	५	१०
योग	**15**	**15**	**30**

मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं का चयन :

शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि ै;जतंजपपिमक ंदकवउ ैंउचसपदहद्ध द्वारा न्यादर्श के रूप मे चयनित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड के प्रत्येक अनुदानित/गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय में से १० छात्र व १० छात्राओं को न्यादर्श के रूप मे निम्नांकित प्रकार से चयनित किया है–

न्यादर्श के रूप मे चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक एवं बालिकाऐं

विद्यालय का प्रकार जोन	अनुदानित माध्यमिक विद्यालय		गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय		योग
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
जोन नं. 1	10	10	10	10	40
जोन नं. 3	10	10	10	10	40
जोन नं. 5	10	10	10	10	40
योग	**30**	**30**	**30**	**30**	**120**

प्रयुक्त शोध उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नांकित शोध उपकरणों का प्रयोग किया है जिनका विवरण अग्रांकित तालिका में निबद्ध है–

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या :

क्र.सं.	चर का प्रकार	सम्बन्धित चर	उपकरण
1.	स्वतन्त्र चर	सामाजिक–आर्थिक स्तर	डॉ. आर. एल. भारद्वाज द्वारा प्रमापीकृत सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी
2.	परतन्त्र चर	भौक्षिक विकास	प्रमापीकृत भौक्षिक विकास परीक्षण माला

परिकल्पनाओं का परीक्षण :

H01. मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके भौक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H01.1उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के भौक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

H01.2 मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के भौक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

H01.3मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के भौक्षिक विकास के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।

स्त्रोत	df	SS	MS	F	सार्थकता स्तर
कारक - A (सा0–आ0 परि0)	2	518914418885031178.94	259457209442515589.47	10.93	.01 पर सार्थक
कारक - B (लिंग विभेद)	1	243113250355584840	243113250355584840	10.25	.01 पर सार्थक
अन्तर्क्रिया	2	700960911089288545.35	350480455544644272.68	14.77	.01 पर सार्थक
त्रुटि	114	4603217725218741632.07	40345926418653307.38		
कुल	119	53652453944593576 51.01			

मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर व उनके लिंग विभेद के विभिन्न स्तरों पर उनके शैक्षिक विकास प्राप्तांकों के द्वि–मार्गी प्रसरण विश्लेषण की सारांश सारणी

F- अनुपात का (df = 1,294) पर सारणी मान F.05 = 3.85 o F.01 = 6.66

F- अनुपात का (df = 2,294) पर सारणी मान F.05 = 3.00 o F.01 = 4.62

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि F अनुपात का अवकलित मान (F= 10.93) मुक्ताशों (df = 2,294) के लिए सारणी मान F.01 = 4.62 से अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना *'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं* के भौक्षिक विकास प्राप्तांकों *में सार्थक अन्तर नहीं है।'*

F- अनुपात का अवकलित मान (F = 10.25) मुक्ताशों (df = 1,294) के लिए सारणी मान F.01 = 6.66 से बहुत अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना *'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के* भौक्षिक विकास *प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।'*

F- अनुपात का अवकलित मान (F = 14.77) मुक्ताशों (df = 2,294) के लिये सारणी मान F.01 = 4.62 से बहुत अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना *'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के* भौक्षिक विकास *के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।'*

परिणाम एवं व्याख्या : उपरोक्त प्रदत्तों के विश्लेषणोंपरान्त प्राप्त परिणाम निम्नांकित हैं–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके भौक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

व्याख्या : प्रदत्तों के विश्लेषणोंपरान्त प्राप्त परिणामों से यह विदित होता है कि प्रायः मलिन बस्तियों में रहने वाले बालकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर यथा– माता–पिता का शैक्षिक स्तर, सामाजिक संस्थिति,

जाति, घर, परिवार व सुमदाय का वातावरण तथा उनकी आर्थिक स्थिति आदि बालकों के भौक्षिक विकास पर सीधे प्रभाव डालती है। बालकों के माता–पिता/अभिभावकों की अनुकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां उनके भौक्षिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं जबकि प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां उनके भौक्षिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार शैक्षिक विकास से सम्बंधित अन्य अध्ययनों में पाया गया कि बालको के घर तथा उनके स्कूल का वातावरण, उनके भौक्षिक विकास को प्रभावित करता है

व्याख्या : उपरोक्त परिणामों से यह भी विदित होता है उत्तर प्रदे ा के लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में रहने वाले सामान्य जाति, अन्य पिछ़ड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति/जनजाति के बालकों एवं बालिकाओं के भौक्षिक विकास में सार्थक अन्तर है। इसके कारण यह हो सकते हैं कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था जाति प्रधान है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जातीय संस्तरण अत्यन्त जटिल व सर्वव्यापक है। सामान्य जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित जाति/जनजाति के भौक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर में बहुत अन्तर है जहाँ सामान्य जाति के प्रायः अधिकां ा लोग उच्च ि ाक्षा प्राप्त, समाज में प्रतिश्ठित व आर्थिक रूप से समृद्ध हैं तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के लोग अल्प ि ाक्षित व सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछ़ड़े हैं तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के लोग भौक्षिक, सामाजिक व आर्थिक विकास से वंचित हैं। इसी प्रकार सामान्य जाति के अधिकां ा बालकों एवं बालिकाओं नित्य नवीन विकसित अति आधुनिक सूचना व संचार प्रौधोगिकी के साधनों का अत्याधिक लाभ उठा रहे हैं वहीं पिछ़डें वर्ग के अधिकां ा बालकों एवं बालिकाओं इनका अल्प लाभ उठा पा रहे हैं। तो अनुसूचित जाति/जनजाति के अधिकां ा बालकों एवं बालिकाओं इनसे परिचित भी नहीं हैं।

निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ :

प्रदत्तों के वि लेशणोंपरान्त प्राप्त परिणामों से यह विदित होता है कि प्रायः मलिन बस्तियों में रहने वाले बालकों की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां यथा माता–पिता का भौक्षिक स्तर, सामाजिक संस्थिति, जाति, घर, परिवार व सुमदाय का वातावरण तथा उनकी आर्थिक स्थिति आदि बालकों के भौक्षिक विकास को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। बालकों के माता–पिता/अभिभावकों की अनुकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां उनके भौक्षिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं जबकि प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां उनके भौक्षिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां व लिंग विभेद दोनों मिलकर बालकों एवं बालिकाओं के भौक्षिक विकास को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। जैसा कि प्रदत्तों वि लेशणोंपरान्त पाया गया कि मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां व लिंग विभेद दोनों बालकों एवं बालिकाओं के भौक्षिक विकास के लिये सार्थक रूप से अन्तक्रिया करते हैं।

वर्तमान शोध अध्ययन शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, मानव संसाधन प्रबन्धकर्त्ताओं, आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीकी विदों व नीति निर्माताओं तथा दिन–प्रतिदिन शिक्षण कार्य में संलग्न शिक्षकों को मुख्यधारा से कटे हुये मलिन बस्तियों में रहने वाले भौक्षिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित विद्यार्थियों की भौक्षिक, सामाजिक, आर्थिक आव यकताओं व सीमाओं का समुचित ज्ञान कराकर उनमें आवश्यक सूझ विकसित करने में सहायक हो सिद्ध हो सकता है। जिससे नीति निर्माता देश एवं समाज की वर्तमान समसामयिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर शैक्षिक नीतियों का निर्माण कर सकें तथा शिक्षाविद्, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री, मानव संसाधन प्रबन्धकर्ता, आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीकीविद्, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक आधारों पर देश एवं समाज की वर्तमान समसामयिक आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्माण कर सकें तथा इसमें समुचित शैक्षिक नवाचारों का प्रवेश कराकर इसे

समसामयिक बना सके एवं दिन–प्रतिदिन शिक्षण कार्य में संलग्न शिक्षक–प्रशिक्षकों को अत्याधुनिक सूचना व संचार तकनीकी का समुचित प्रयोग करते हुये उपयुक्त शिक्षण विधियों से परिचित करा सकें तथा मुख्यधारा से कटे हुये मलिन बस्तियों में रहने वाले भौक्षिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित विद्यार्थियों का समुचित भौक्षिक विकास कर अनावश्यक मानव संसाधन की निश्ठुर बर्वादी को रोका जा सके तथा देश में उपलब्ध कुशल व प्रशिक्षित मानव संसाधन कर समुचित उपयोग करते हुये देश को सन् 2020 तक विकसित राश्ट्रों की श्रेणी में खड़ा किया जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

मिश्र,बी0 (2011). *अनुसूचित जाति व गैर अनुसूचित जाति विद्यार्थियों के भौक्षिक अनुकूलन, उपलब्धि एवं सामाजिक आकांक्षा का अध्ययन.* अप्रकाभित पी–एच0डी0 थीसिस, ि ाक्षा संकाय, डा0 हरि सिहं गौर वि वविद्यालय, सागर मध्य प्रदेभा, पृश्ठ संख्या 86.

त्रिपाठी, विनीता (2011). *मलिन बस्तियों के निवासियों के बच्चों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का उनके भौक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन अप्रकाभित* पी–एच0डी0 थीसिस, ि ाक्षा संकाय, `छत्रपति साहू जी महाराज वि वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेभा, पृश्ठ संख्या 122.

Report of the Education Commission (1964-1966). *Education for National Development. Ministry of Education*, Government of India, New Delhi.

Crouch , Catherine H. And Selby, Mazur (2011). Mental Security and Well Being : *Ten Years of Experience and Results. British Journal of Psychology,* Sept. 2011, pp. 970-977. Retrieved on November 1, 2012 from www.nimhe.org.uk

Report of the National Sample Survey Organisation (2011*). Ministry of Statistics and Programme Implementation,* Government of India: New Delhi. Retrieved on November 1, 2012 from http://en.wikipedia.org/wiki/National_Sample_Survey_Organisation

Travers, Robert M.W. (1961). *An Introduction to Educational Research*, The MacMillan Company, New York.

Verma, H. R. (2007). *Attitude Towards Modernization in Relation to Alienation, Achievement-Motivation and Values of Rural Educated Youth of H. P.*, Ph.D. Thesis, H. P. University, Shimla.

lmc.up.nic.in/

mhupa.gov.in/W_new/Slum_Report_NBO.

csatforu.blogspot.com/2011/state-wise-projected-slum-population.

www.financialexpress.com/news/upplanners.over.slums/73478